

प्रेषक,

डा0 आर0 राजेश कुमार,

अपर सचिव,

उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

मुख्य कार्यपालक अधिकारी

उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड,

भोपालपानी, देहरादून।

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम अनुभाग

देहरादून : दिनांक: 24 जुलाई, 2016

विषय:-रेशा खरीद हेतु अनुदान योजना की गाइडलाईन की स्वीकृति के संबंध में।

महोदय,

उत्तराखण्ड राज्य के पर्वतीय जनपदों के अधिकतर क्षेत्रों में प्राकृतिक रेशा जैसे डॉस कंडाली, भीमल एवं रामबॉस का अधिक उत्पादन होता है। इन रेशों का प्रयोग स्थानीय स्तर पर काफी अधिक मात्रा में किया जाता है। इन प्राकृतिक रेशों से निर्मित उत्पादों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर अधिक से अधिक रोजगार उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से शासन के सम्यक् विचारोंपरान्त "रेशा खरीद हेतु अनुदान योजना" प्रारम्भ किये जाने की श्री राज्यपाल महोदय सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं। योजना की गाइडलाईन्स निम्नवत है:-

"रेशा खरीद हेतु अनुदान"

1. योजना का मुख्य उद्देश्य:-

राज्य के ग्रामीण आंचलो में प्राकृतिक रेशों पर आधारित पारम्परिक कास्तकारों (दस्तकारी) को संरक्षित कर विकास करना तथा आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर मूल्यवर्धन करते हुए कारीगरों को लाभ देकर प्रोत्साहित करना। प्राकृतिक रेशों का मूल्य निर्धारण न होने के कारण स्थानीय कास्तकारों को इसका समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है तथा रेशों से तैयार होने वाले उत्पाद विलुप्त हो रहे हैं। इस प्रयोजन से राज्य सरकार द्वारा प्राकृतिक रेशों का दर निर्धारण कर स्थानीय कास्तकारों से रेशा कय कर उसका भण्डारण किया जायेगा। प्राकृतिक रेशों के उत्पाद तैयार करने वाले सरकारी, गैरसरकारी, व्यक्तिगत उद्यमी आदि को अधिकतम 50 प्रतिशत अनुदान पर खुली निविदा के माध्यम से विक्रय किया जायेगा ताकि स्थानीय स्तर पर अधिक से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया जा सके।

2. दर निर्धारण समिति:-

रेशा के दर निर्धारण हेतु उत्तराखण्ड शासन, वन एवं पर्यावरण अनुभाग के शासनादेश संख्या:-3611/X-2-2009-11(1)/2009 देहरादून दिनांक 25 नवम्बर 2009 के द्वारा 07 सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। यह समिति प्राकृतिक रेशों की उपलब्धता, गुणवत्ता

आदि मानको के आधार इनकी दरों का निर्धारण करेगी। उक्त दरे शासन के दिशा निर्देशों के अनुरूप समय-समय पर परिवर्तनीय होंगे।

3. रेशा कय/बिकय हेतु चयनित स्थान:-

प्राकृतिक रेशा उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के अधीनस्थ विभाग क्षेत्रीय अधीक्षक उद्योग ऊन के माध्यम से विभिन्न केन्द्रों पर कय किया जायेगा।

उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण स्तर पर कास्तकारों द्वारा एकत्रित किये गये प्राकृतिक रेशों के रखरखाव हेतु विभिन्न समूहों में से एक व्यक्ति का चयन किया जायेगा, जो क्षेत्र में प्राकृतिक रेशों का भण्डारण करेगा। इस हेतु उन्हें निम्न प्रकार प्रति कि०ग्रा० की दर से प्रोत्साहन राशि प्रदत्त की जायेगी, प्रोत्साहन राशि को कय दर में जोड़ा जायेगा।

क०सं०	डांस कंडाली रेशा	भीमल रेशा	रामबॉस रेशा
प्रोत्साहन राशि	रु० 4.00 प्रति किग्रा	रु० 2.00 प्रति किग्रा	रु० 4.00 प्रति किग्रा

4. रेशा कय समिति:-

निर्धारित दरों के आधार पर रेशा कय हेतु निम्नानुसार जनपद स्तर पर एक कमेटी का गठन किया जायेगा। कमेटी स्थानीय कास्तकारों से प्राकृतिक रेशों का कय, उसकी गुणवत्ता के आधार पर करेगी:-

1. सम्बन्धित जनपद के जिला ग्रामोद्योग अधिकारी, उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड।
2. सम्बन्धित क्षेत्र के क्षेत्रीय अधीक्षक उद्योग ऊन उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड।
3. प्रभागीय वन अधिकारी (प्रतिनिधि)

प्राकृतिक रेशा कय के उपरान्त रेशों के बिकय मूल्य में रेशों के भण्डारण हेतु समिति से चयनित व्यक्ति की प्रोत्साहन राशि उसके संग्रहण पर हुए व्यय आदि को सम्मिलित करते हुए उसमें 10 प्रतिशत विभाग का लाभांश जोड़कर अधिकतम 50 प्रतिशत अनुदान पर संस्था/समितियों/एन०जी०ओ०/व्यक्तिगत उद्यमियों को खुली निविदा के माध्यम से बिकय किया जायेगा। उक्त दरें केवल उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के संग्रहण केन्द्रों पर लागू होंगी।

5. विपणन व्यवस्था:-

क्षेत्रीय अधीक्षक उद्योग-ऊन, उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, अल्मोड़ा /श्रीनगर/चम्बा/जसपुर केन्द्रों पर एकत्रित प्राकृतिक रेशों का भण्डारण किया जायेगा। पर्याप्त मात्रा में रेशा एकत्रित होने पर रेशा उपलब्धता को समाचार पत्रों में विज्ञापन शासकीय/विभागीय वेबसाईड के माध्यम से प्रचारित किया जायेगा। प्राकृतिक रेशों के उत्पाद तैयार करने वाले इच्छुक सरकारी विभाग, सरकारी संस्था/समितियों को रेशा बैंक के माध्यम से 50 प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध करायेगें। राज्य सरकारों के विभागों/संस्थाओं को उनकी मांग पर प्राथमिकता पर रेशा दिया जायेगा। बिक्री धनराशि को माहवार रेशा बैंक हेतु निर्धारित खाते में जमा करते हुए उसका रखरखाव सुनिश्चित किया जायेगा।

6. कार्मिकों की व्यवस्था:-

प्राकृतिक रेशा कय हेतु अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति नहीं की जायेगी। इस कार्य को उत्तराखण्ड खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड में तैनात कार्मिकों द्वारा ही सम्पादित किया जायेगा।

7. योजना का प्रचार-प्रसार किया जाये ताकि समय से रेशे का दोहन कर उपलब्ध हो सके।

8. वार्षिक लक्ष्य विभाग द्वारा समय-समय पर निर्धारित किये जायेंगे।

9. उक्त योजना sunset clause के साथ चालू वित्तीय वर्ष 2016-17 से 02 वर्ष हेतु प्रारम्भ की जायेगी तथा भविष्य में उक्त योजना का आंकलन करते हुए पुनः समय विस्तारीकरण के संबंध में निर्णय लिया जायेगा।

10. ये आदेश वित्त विभाग उत्तराखण्ड शासन के अ०शा० संख्या:- 293/XXVII(2)/2016 दिनांक 27 जुलाई, 2016 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

(डा० आर० राजेश कुमार)

अपर सचिव।

संख्या: 1613 (1) / VII-2/47-एम०एस०एम०ई०/2016, तददिनांकित।

प्रतिलिपि:- निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. प्रमुख सचिव/सचिव, मा० मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड शासन।
2. समस्त अपर मुख्य सचिव/सचिव/प्रभारी सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
3. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन को मुख्य सचिव महोदय के संज्ञानार्थ।
4. समस्त विभागाध्यक्ष, उत्तराखण्ड।
5. महालेखाकार, उत्तराखण्ड, देहरादून।
6. मण्डलायुक्त गढवाल/कुमाऊँ, उत्तराखण्ड।
7. निदेशक, उद्योग, उद्योग निदेशालय, उत्तराखण्ड, देहरादून।
8. समस्त जिलाधिकारी, उत्तराखण्ड।
9. निजी सचिव, मा० मंत्री, खादी एवं ग्रामोद्योग, उत्तराखण्ड को मा० मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
- ✓ 10. निदेशक, एन०आई०सी० सचिवालय परिसर, देहरादून।
11. निदेशक, राज्य खादी ग्रामोद्योग आयोग, जी०एम०एस० रोड, देहरादून।
12. गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

Dhirendra

(धीरेन्द्र कुमार सिंह)

अनु सचिव।

